



जब काबुल बाबा अमीन साहिब के सामने आकर खड़ा था तो अमीन साहिब बिना मुँह खोले जोर से हकलाया। फिर उसने लगा- हॉं बोलो भाई, गाय की चोरी हो गयी क्या? नहीं... वह गाय नहीं, बैल था बूढ़े ने साफ तौर पर कहा। बैल था?...
जी... जी
तो बैल कहो न।
हां,
अब समझा..।
बड़ा बैल? ये तो अच्छा नहीं हुआ!.. अमीन ने कुटिलता से मुस्कराया।

Shot on AWESOME A70

मेरे पास बस यही एक बैल था... काबुल बाबा ने दुहराया। अमीन साहिब अपनी छोटी उंगली नाक के अन्दर घुमाया और अनायास हँसने लगा।

क्या गायब होने से पहले बैल ही था? वह किस प्रकार का बैल था? अमीन ने जिरह करते हुए कहा।

काफी बड़ा बैल था... बूढ़े ने लरजते हुए कहा। क्या यह अच्छा बैल था या खराब बैल?

खेतों में हल चलाने लायक अच्छा बैल था साहब! इस पर अमीन ने बूढ़े का प्रतिवाद करते हुए कहा- अच्छा बैल होता तो किसी अनजाने के साथ यूँ ही नहीं चला जाता? मेरे पास इस बैल के अलावा कुछ भी नहीं है... बूढ़ा भरभराते स्वर में कहा।

अमीन ने बूढ़े से प्रश्न किया कि क्या वह खुद ही वापस नहीं आएगा? क्या तुमने उसे यह नहीं समझाया था कि अगर कोई ले जाए तो खुद चलकर वापस आ जाना!

अमीन ने बूढ़े को कहा -क्यों रोते हो? रोओ मत।

काबुल बाबा आँखें नीचे करके चुपचाप खड़ा था।

क्या हम खोजने के लिए लोगों को लगा दें?

-लेकिन मुझे दक्षिणा में क्या मिलेगा?

क्या कोई दक्षिणा नहीं लाए हो?

अमीन साहिब की बातें काबुल बाबा को इस तरह सुनाई दी "लो तुम्हारा बैल!"

"जीते रहिये," उसने उनके हाथ में पैसे सौंपते हुए कहा

अमीन ने कहा "मैं आपकी सेवा में हूँ।"

मैं बॉक्स ऑफिस (पर्यवेक्षक) को रिपोर्ट भेजता रहूंगा। वे खुद तुम्हें बुला लेंगे।

एक सप्ताह बीत गया। एक सप्ताह में बुढ़िया आधा बैग चावल, तीन थाली में भुट्टा और धागे की दो रील ज्योतिषी के पास लेकर गई। ज्योतिषी के बारे में मान्यता थी वह "प्रार्थना की शक्ति से किस्मत का ताला खोलता है"। पर इस ज्योतिषीय उपाय से भी समस्या का हल नहीं हुआ। आठवें दिन काबुल बाबा फिर से अमीन साहिब के पास गये। काबुल बाबा को देखते ही अमीन साहिब का पारा चढ़ गया।

-हॉं बोलो, बैल को घर तक पहुंचा दें क्या?

आखिरकार उससे कहो कि वह पहले अदालत जाए और शिकायत करो!

यह एक नागरिक का अदालत के प्रति सम्मान माना जाता है।

काबुल बाबा ने अपने दोस्तों से सलाह ली कि पैसे के अलावा बड़े वाले साहब के पास क्या ले जाया जा सकता है? उसे पता चला कि उन्हें राजी करने में उसकी कमर टूट जायेगी।

फिर भी काबुल बाबा ने जैसे जैसे इंतजाम किया। तीन मुर्गियाँ, हालाँकि उनमें एक टर्की थी, स्वयं काबुल बाबा के घर से निकलीं। पड़ोसियों और भाइयों ने आपस में मिलकर सौ अंडे जुटाए। लेकिन क्या इतना सब कुछ देकर भी बैल वापसी संभव होगा? अमीन के सहायक ने उन सारी चीजों को बतौर नजराना पेश हुई थी उसने समेट लिया। इस पेशगी के बदले उसने किसान से वादा किया कि वह अपने मालिक को सब-कुछ ठीक-ठीक समझा देगा। लेकिन उसने ऐसा किया नहीं।

बूढ़े की हालत दिन ब दिन बदतर होती गयी, पर वह किसी से क्या कहे और करो!

"किरदार के साथ न खेलो जो हर तरह से तुमसे बदला ले सकता है।" "अच्छी तरह से समझाए गए" कार्रवा के द्वारा दो मोटी सी मुर्गी और तीस रुपये लेने के बाद भी काबुल बाबा से यह नहीं कह सके कि "आप बड़े हाकिम को अर्जो लिखिये"

पर उसने कहा कि "आप अमीन साहिब के पास जाइये।" मुझे बताइये कि आपको क्या संदेह है।

पचायतवाले ने गुस्से के साथ कहा- मुझे नहीं पता कि बैल को किसने चुराया, मैं संत तो नहीं हूँ! जो भविष्यवाणी कर दें। जिस व्यक्ति ने बैल चुराया है। इतने दिनों में वह उसे मार दिया होगा।

इससे बेहतर है कि आप कसाईबाड़ा की तरफ जाइए। यह जगह यहां से दूर नहीं है। पास ही जाना है। आपको थकान भी नहीं होगी। एक काम करिए आप चमड़े वालों के पास जाइए। वहां एक-एक बैल की खाल को देख लीजिये.. मगर ये बात भी हो सकती है कि आपके बैल का चमड़ा खाल उधेड़ने वाले के हाथ में आया हो और शायद जूता बनाने वाले ने जूता बनाकर बाजार में बेचने के लिए भेज दिया हो..

हताशा होकर काबुल बाबा ने कहा- आप ही बताइए! अब मैं क्या करूँ, हमारे लिए यह संकट क्यों आया... - बूढ़े ने जमीन की ओर देखते हुए आँखें गड़ा दी।

"अरे, तुम बच्चे हो क्या, रोते रहते हो? इतने बड़े हो.. आदमी हो... एक बैल की ही तो बात है, तुम्हारे पास कुछ और भी तो होगा। अमीन के आदमी ने भरोसा दिलाया- भगवान मौत से बचाये। मैं अपने ससुर से कहूंगा कि वह तुम्हें एक बैल दे दे। बस, एक बैल देना है। किसी का खून थोड़े ही लेना है? काबुल बाबा की निराशा दूर करते हुए उसने कहा।

अगले दिन वह काबुल बाबा को अपने ससुर एगंबर्दी कपास वाले के पास ले गया। कपास वाले को बूढ़े की हालत पर बहुत अफसोस हुआ और उसने उसे खेत जातने के लिये एक नहीं, बल्कि दो बैल दिए। लेकिन एक छोटी सी शर्त थी। यह शर्त क्या है शरद की फसल काटते समय पता चलेगा। ■

अनुवाद: प्रो. उत्कृत मुखीबोवा

फोन: 9989464303



चोर

घोड़े की मौत कुत्तों का त्योहार। (कहावत)

➤ अब्दुल्ला का खवार

बदिया जब सुबह-सुबह आटा गंथने के लिये उठी तो वह सबसे पहले अपने बैल को देखने गयी। अरे! बैल तो है ही नहीं, कहाँ गए? उसने चारों ओर निगाह दौड़ायी तो देखा- सड़क की ओर की दीवार में एक छेद दिखाई दिया... ओह! उसका दिमाग ठनका।

ये बात उसके मन में हमेशा चलती रहती थी कि किसान का घर भले ही जल जाए, लेकिन उसके बैल न जलो। किसान के लिए घर में अगर भूसे से भरा एक थैला हो, दस-पंद्रह डंडे और नरकट का एक रथ हो तो समझो वह सम्पन्न है। एक किसान को बैल खरीदने के लिए न जाने कितने उसे इतजाम करने पड़ते हैं? कितने दिन तक उसे अपना बर्तन पानी में डालकर रखना पड़ेगा?

इस गाँव में चारों तरफ हो-हल्ला मचता रहता। लोग लड़ाई-झगड़े से उठते शोर-शराबे के अभ्यस्त हो गए थे।

गांव में कोई अपनी पत्नी को पीट रहा है तो कहीं से किसी को बुरी खबरवाली चिट्ठी मिली है... कोई चोट से कराह रहा है तो कोई दुःख से रो चिल्ला रहा है। ये तो रोजमर्रा के लिए आम बात थी।

मगर इस वक्त सुबह सुबह बुढ़िया की चिल्लाने की आवाज? लोग हड़बड़ा कर दौड़े। उसके घर के इर्द-गिर्द काफी लोग इकट्ठे हो गये। काबुल बाबा नो सिर, नो पैर, बिना कुर्ता पहने अकेले अपने दरवाजे पर खड़े हैं। वे वहीं खड़े थे। जहाँ उनका बैल बंधा रहता था। वे घबराहट के मारे कांप रहे थे, उनके घुटने रह-रह के मुड़ रहे थे, आँखें रह-रह कर फड़फड़ा रही थीं। वे आस-पास खड़े लोगों की तरफ देखते, पर उन्हें कुछ नजर नहीं आ रहा था। पास खड़ी स्त्रियाँ चोर को गालियाँ दे रही थीं। लोगों की भीड़-भाड़, शोरगुल से कुत्ते भी भौंकने लगे, मुर्गियाँ कुड़कुड़ा रही थीं। लोगों का यही बार बार कहना था कि इतने छोटे से छेद से बैल कैसे चुराया जा सकता?

तभी काबुल बाबा का बिना नाक वाला पड़ोसी पंचायत में प्रवेश किया। वह जहाँ से बैल चोरी हुए थे, उस जगह कमरे में दाखिल हुआ। उसने बैल को बाँधे जाने वाले खूँटे को ध्यानपूर्वक देखा। यहीं नहीं, उसने तसल्ली कराने के लिए खूँटे को हिलाकर भी देखा। फिर उसने जोर से काबुल बाबा को आवाज देते हुए कहा-

तुम्हारा बैल कहीं नहीं जाएगा, तुम्हें मिल जाएगा!

काबुल बाबा की पंचायत में जांच करने आए पड़ोसी द्वारा चोरी हुए बैल वाले कमरे की जाँच करना और फिर इस तरह भरोसा दिलाना, उसे बहुत आश्चर्य कर दिया। बूढ़ा अपने पड़ोसी के प्रति कृतज्ञता देखा। काबुल बाबा दिलासे की इस उम्मीद से भावुक हुए और खुशी से उनकी आँखें छलक गईं।

भगवान भला करे! ... बैल काफी बड़ा था...

वहाँ खड़े लोग अब इस बात पर अंदाजा लगाने लगे कि चोर कब और किस उपकरण से इस दीवार में छेद किया होगा? वह बैल को कहाँ ले गया होगा... वह उसे किस बाजार में बेच सकता है? एक-दूसरे के अनुमान पर लोग बहस करते-करते धीरे-धीरे वहाँ से चले गये। काबुल बाबा की बीवी ने अब रोना बंद कर दिया था। अब वह पंचायतवाले को आशीर्वाद देने लगी।

पंचायत वाले ने चोर द्वारा किए गए छेद को फिर से देखा। काबुल बाबा चुपचाप उसके पीछे चलता-फिरता रहा और बीच-बीच में वह दहाड़ मारकर रोता रहा।

रोओ मत, मैं कहता हूँ रोओ मत।

यदि तुम्हारा बैल दरबार के सीमा से बाहर नहीं गया है तो वह जरूर मिल जायेगा, समझो मिल ही जाएगा। यह “भगवान का प्यार” जो इतना प्रयत्न कर रहा है। बूढ़ा सोच में पड़ गया- बैल मिलने पर इसको भी तो कुछ देना पड़ेगा। कहते हैं न! बिल्ली मुफ्त में धूप नहीं सेंकती। आखिर इस आदमी ने भी पंचायत बुलाने के लिए कितने पैसे खर्च किये होंगे? पंचायत जुटाना इतना आसान भी नहीं है। ये बात सभी को ज्ञात है कि उसने भी बड़ी पंचायत के लिए सात सौ गुच्छे और एक घोड़ा दिया था। आखिर दरबार से तो उस बेचारे को कोई तनख्वाह नहीं मिलती। काबुल बाबा ने अपने जेब से जितना भी पैसा था उसे निकालकर उस पंचायत वाले को दे दिया। साथ में उसे दुआएं भी दी। पंचायतवाले ने कहा कि वह अमीन साहिब को जल्दी से सूचित करने के लिए जा रहा है। वह वहाँ से बिना रुके तेजी से बाहर निकल गया। शोर-गुल के बीच यह तय हुआ कि शाम को काबुल बाबा भी अमीन साहिब से मिलने जायेंगे। गहन चिंता से वह मन ही मन बुदबुदाया- सूखा चम्मच मुँह फाड़ देता है, कहाँ से इतने पैसे ले लाऊँ? देनेवाले को तो एक पैसा भी देना कितना मुश्किल और कितना ज्यादा है। लेने वाले को दस पैसे भी कम लगता है। पति- पत्नी ने मिलजुलकर विचार किया- कोई बात नहीं। अब जैसे ही इंतजाम हो सके। बैल तलाशने वाले के लिए उसका यह आखिरी दान होगा। ये क्या कम है कि वह बैल बांधकर उसे लाकर दे देगा, इसलिए पंचायत का मुँह देखना अनुचित नहीं है।

एक और उदाहरण,

“मैं बता रहा हूँ तू रो मत, तुम्हारी बैल यदि बादशाह के सीमा से बाहर नहीं गयी तो जरूर मिल जायेगी”

प्रेमचंद जी की “होरी के जीवन का एक दिन” में,

“लेकिन घर आकर उसने (होरी) ज्यों ही वह प्रस्ताव किया कि कुहराम मच गया। धनिया तो कम चिल्लाई, दोनों लड़कियों ने तो दुनिया सिर पर उठा लीं। नहीं देते अपनी गाय, रुपये जहां से चाहो लाओ।”

यहां पर अब्दुल्ला कछुआर जी ने किसान का धर जल जाये पर बैल न जाए वाक्य से बैल के महत्व को साफ-साफ कह दिया। प्रेमचंद जी गाय बेचने की बात सुनकर बीवी और बच्चों की हालत लिखकर गाय का महत्व को अच्छी तगह समझा दिया।

दोनों कहानियों में गांव के पंचायत के लोगों की बेईमानी भी बड़ी अच्छी तरह से प्रस्तुत की गयी। अब्दुल्ला कछुआर जी की ‘चोर’ में पंचायतवाले के पास जब काबुल बाबा गये तो आपस में इस तरह की बातचीत होती है,

-क्या, बैल खो गया?

-बैल नहीं भैंस था

-खोने से पहले था न, कैसा भैंस था?

-बहुत अच्छा भैंस था।

-अच्छा भैंस होता तो अनजानों के साथ चला जाता? उसे बोला नहीं गया था कि हर किसी के साथ जाया मत करो।”

उनकी बातचीत से पता चलता है कि पंचायतवाला समस्या सुलझाने से दूर है। प्रेमचंद जी की “होरी के जीवन का एक दिन” में महाजन द्वारा इस समस्या का वर्णन इस तरह हुआ,

“गांव में सब से बड़े महाजन थे झिंगुरी सिंह। होरी ने झिंगुरी सिंह के पास जाने का फैसला किया। झिंगुरी सिंह ने जब से उसके द्वार पर गाय देखी, उस पर दांत लगाये हुए थे। ...मन में सोच लिया था, होरी को किसी अरदब में डालकर गाय को उड़ा लेना चाहिये।”

कहानियों से लिये गये इन पर्वों से देखा जा सकता है कहानियों के पात्र उज्बेक हो या भारतीय हो, घटना कैसी भी हो गरीबों को लूटना महाजनों, पंचायतवालों का मुख्य काम है।

दोनों कहानियों में गांववालों का एक दूसरे का समर्थन देना, कठिनाई में एक दूसरे को हाथ फेलाना गाय और बैल की घटना द्वारा दिखाया गया है। दोनों कहानियों में गाय और बैल से संबंधित संकट पूरे गांववालों के लिये बड़ी संकट की बात बन जाती है,

अबदुल्ला कछुआर जी की ‘चोर’ में,

“बुढ़िया की आवाज से लोग जल्दी इकट्ठे हो गये। काबुल बाबा बिना टोपी, बिना चप्पल, बिना कुतें बाहर

बैल खोयी कमरे के पास कांपते हुए इधर-उधर देख रहे थे पर कुछ दिखता नहीं था। औरतों की चोर को गालियां देने की, कुत्तों के भौंकने की और मुर्गियों की कु-कु जैसी आवाजें आ रही थीं।”

प्रेमचंद जी “होरी के जीवन का एक दिन” इसका वर्णन इस तरह है,

“धनिया सिर पीटने लगी। होरी पंडित दातादीन के पास दौड़ा। सारा गांव जमा हो गया। गाय को किसी ने कुछ खिला दिया। साफ विष दिया गया है।”

अबुल्ला कछुआर जी और प्रेमचंद जी दोनों ने अपनी इस कहानी में दो मुख्य बातें रखीं- पहला गाय और बैल की समस्या, दूसरा इस द्वारा उस जमाने के पंचायतों, महाजनों का सख्त आलोचना करना। दोनों लेखकों ने इस में एक जैसा सफल रहे। दोनों कहानियां अपने पाठकों के लिये बड़ी प्यारी कहानियां हैं, दोनों के पात्र एक जैसे हैं, दोनों की घटनाएं बहुत मिलती जुलती हैं। दोनों कहानियां 20वीं सदी के शुरू के गांव के लोगों के जीवन के बारे में हैं। एक यथार्थवाद लेखक के रूप में दोनों लेखकों ने उस जमाने की हिसाब से सही बातें लिखी हैं।

हमें उम्मीद है कि इस लेख को पढ़ने के बाद पाठक यह समझ सकता है कि इंसान कहीं भी न रहे एक जैसा सोचता है, हर एक देश के गांव या शहर की समस्याएं एक एक जैसी होती हैं, उनका सिर्फ शकल अलग हो सकता है पर भाव अकसर एक जैसा होता है। हर एक देश का लोक साहित्य, लोक कथाएं इसका एक सबसे अच्छा उदाहरण है।

सहायक किताबों की सूची:

अबदुल्ला कछुआर. चोर. ताशकंद, 2012

प्रेमचंद. होरी के जीवन का एक दिन। दिल्ली, 1936

संदर्भ:

1. Abdulla Kaxxar, O'gri (Chor), P-5
2. प्रेमचंद, होरी के जीवन का एक दिन, पृ.3-4.
3. Abdulla Kaxxar, O'gri (Chor), P-5
4. Abdulla Kaxxar, O'gri (Chor), P-6
5. प्रेमचंद, होरी के जीवन का एक दिन, पृ.4.
6. Abdulla Kaxxar, O'gri (Chor), P-7
7. प्रेमचंद, होरी के जीवन का एक दिन, पृ.4.
8. प्रेमचंद, होरी के जीवन का एक दिन, पृ.4.

संपर्क- उज्बेकिस्तान

ईमेल: ulfatmuhib8@mail.ru

फोन: 998946443037

(1962), “मेरी नानियाँ” (1967) आदि। खासकर “शाही जमाना” नाटक में नाटककार ने खाली जमीनों को आबाद करना और उन पर खेतिबारी के काम शुरू करने के विषय शानदार ढंग से वर्णन किया। आगे चलकर उनका यह नाटक हमारे और दूसरे कई देशों के मंचों पर सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया है—

अब्दुल्ला कछुआ एक अनुवादक के रूप में भी अपने काम में फलदायी रहे। लेखक को उज्बेक लोगों का चेखव कहा जाता था। अब्दुल्ला कछुआ ने स्वयं लिखा था: मेरे बचपन के साल फराना घाटी में बीते थे... जब मैंने उस के दशक के मध्य को याद किया, तो यह मुझे एक राजक और अजीब सपने जैसा लगा... मेरी ऐसी कई थीं। वे अक्सर सतह पर आ जाते थे, लेकिन कुछ ऐसे भी थे जो मेरे दिमाग की गहरी यादों में बने रहे।

यदि एंटोन पावलोविच चेखव नहीं होते तो वह हमेशा के लिए वहीं रह गये होते। तीस साल पहले एंटोन पावलोविच चेखव का बाईस अध्याय का एक संग्रह मेरे हाथ लगा। मैंने यह पुस्तक लगभग कुछ ही दिनों में पढ़ ली। कुछ असामान्य हुआ, मानो महान कहानिकार, एक सम्मानित शिक्षक ने अपना चश्मा मेरे हाथ पर रखकर कहा: “अपना चश्मा पहनो और अपने लोगों के अतीत को देखो”... इस प्रकार मेरे मन में युवावस्था का चित्र जाग उठा और पिछला जीवन मेरी आँखों के सामने और अधिक स्पष्ट रूप से उभरने लगा। शायद इसीलिए तीस के दशक के मध्य में लिखी गई मेरी कहानियाँ दुख से भरी हैं: “चोर”, “रोगी”, “राष्ट्रवादी”, “शहर का बाग”...! लेखक द्वारा रूसी साहित्य के नमूनों का उज्बेक में अनुवाद किया गया था। अ.स. पुश्किन की “कैप्टन की बेटी”, न.व. गोगोल की “इस्पेक्टर” और “मरीज”, ल.न. टॉल्स्टॉय की “युद्ध और शांति”, अ.स. सेराफिमोव की “लोहे के रास्ते”। गोकर्नी की “मेरे विश्वविद्यालय”, साथ ही ए.प. चेखव, म.स. शगिन्यान, क.ए. ट्रेन्योव और अन्य के कार्य।

अब्दुल्ला कछुआ का 61 वर्ष की आयु में 25 मई 1968 को मास्को में निधन हो गया। अपने जीवनकाल के दौरान, उन्हें अब्दुल्ला कछुआ हमजा (1966), फिर “उज्बेकिस्तान का जन लेखक” (1967) के नाम पर उज्बेकिस्तान के सरकारी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और उनकी मृत्यु के बाद उन्हें ‘महान सेवाओं के लिये’ (2000) सम्मानित किया गया था।

उज्बेक साहित्य के विकास में अमूल्य योगदान दिये कछुआ जी के याद में ताशकंद में एक प्रतिमा स्थापित की गई है, जिसे दर्शन करने सारे उज्बेक कवि, लेखक और साधारण लोग आते हैं।

कछुआ और प्रेमचंद की कहानी का तुलनात्मक विश्लेषण।

अबदुल्ला कछुआ तथा प्रेमचंद लगभग एक ही समय-20वीं सदी के शुरू में रहकर अपनी जनता की

समस्याओं को अपनी कहानियों में माहिराना प्रतिबिंब करनेवाले लेखक थे। दोनों लेखक अपनी छोटी-छोटी कहानियों में अपने समय की बड़ी-बड़ी समस्याओं को ऐसे साधारण घटनाओं, ऐसी सरल भाषा में व्यक्त करते थे कि उनको पढ़कर मन में कहानी के उन पात्रों पर दया, हमदर्दी, आम लोगों को सताने वाले उन जालीमों के प्रति नफरत पैदा होता है।

तुलनात्मक अध्ययन के लिये चुनी गयी अब्दुल्ला कछुआ जी की ‘चोर’ और प्रेमचंद जी के ‘होरी के जीवन का एक दिन’ नामक कहानियाँ हैं जो एक ही समस्या पर – गांव के लोगों के गाय से संबंधित जिंदगी का एक झलक के माध्यम से वहां के गरीब लोगों की जिंदगी में गाय का महत्व दिखाया गया, गांव के महाजनों की, पंचायतवालों को आलोचना किया गया।

अब्दुल्ला कछुआ जी की ‘चोर’ नामक कहानी काबुल बाबा के घर से रात के अंधेरे में बैल के खो जाने से शुरू होता है और प्रेमचंद जी की “होरी के जीवन का एक दिन” कहानी जब से होरी के घर में गाय आने पर घर की श्री कुछ और हो जाने से शुरू होती है। एक कहानी में घर में बैल आने की खबर है, दूसरी में गाय खो जाने की खबर।

दोनों कहानियों में गाय और बैल से संबंध संकट – एक कहानी में बैल का खो जाना, दूसरे में गाय का मर जाने का वर्णन इस तरह किया गया।

अब्दुल्ला कछुआ जी की ‘चोर’ में,

“बुढ़िया जब रात के अंधेरे में आटा सेंकने उठी तो गाय को देखने भी गयी। अरे, गाय नहीं है, पीछे की दीवार में छेद पैदा हुआ है।”

प्रेमचंद जी ‘होरी के जीवन का एक दिन’ में,

“सहसा गोबर आकर घबराई हुई आवाज में बोला- दादा सुन्दरिया को क्या हो गया, क्या काले नाग ने छू लिया- वह तो बड़ी तड़प रही है। होरी चौक में जा चुक था। थाली सामने छोड़कर बाहर निकल आया और बोला – क्या असगुन मुंह से निकालते हो। अभी तो मैं ने देखा था। लेटी थी।”

दोनों लेखकों ने अपनी कहानी में गरीब के परिवार में जीवन गुजारने के लिये गाय और बैल का महत्व कितना बड़ा है यह बड़ी स्पष्टता से व्यक्त किया।

अब्दुल्ला कछुआ जी की ‘चोर’ में,

“किसान का घर जल जाये पर बैल न जाए। एक थैला टिका, दस-पंद्रह लकड़ी, एक रथ गन्ना हो तो घर तैयार, पर गाय खरीदने के लिये पता नहीं कितने समय तक बर्तन पानी डालके रखना पड़ता है।”

उज्बेक कहानिकार अब्दुल्ला कख़्बार

➤ प्रो. उल्फत मुखीबोवा

अब्दुल्ला कख़्बार का जन्म 17 सितंबर, 1907 को कोकन्द शहर में हुआ था। अब्दुल्ला के पिता एक लोहार थे और उनका परिवार अस्थायी काम की तलाश में एक गाँव से दूसरे गाँव जाता था। शाम को, उनके पिता उन्हें पुरानी चित्र पुस्तकों से कहानियाँ पढ़ाया करते थे। तमाम कठिनाइयों के बावजूद, पिता अब्दुकख़्बार जलीलोव और माँ ने अपने बेटे को प्राथमिक शिक्षा देने में सक्षम थे। 1919 से 1924 तक, अब्दुल्ला ने स्कूल में पढ़ाई की, फिर कोकन्द पेट्रोगोर्ज्कल कॉलेज में अपनी पढ़ाई जारी रखी, 1924 से 1926 तक कोकन्द राज्य कोम्सोमोल समिति में काम किया और फिर ताशकंद में “फ़िजिल उज्बेकिस्तान” अखबार के संपादकीय कार्यालय में काम किया। 1926-1934 में उन्होंने श्रमिक संकाय में अध्ययन किया, फिर प्रथम मध्य एशियाई राज्यकीय विश्वविद्यालय (1930) के शिक्षाशास्त्र संकाय में। पत्रिका “सोवियत साहित्य” (1934-1938) के जिम्मेदार सचिव, हमजा (1938-1939) नामक उज्बेक अकादमिक इन्स्टीट्यूट के साहित्यिक विभाग के अध्यक्ष रहे। तथा कई प्रकाशन गृहों में संपादक और अनुवादक के रूप में काम करते थे (1939)। उज्बेकिस्तान के संयुक्त उद्यम के प्रेसिडियम के अध्यक्ष (1954-1956) रहे। 1955 में उन्हें उज्बेक सोवियत की सर्वोच्च परिषद के डिप्टी के रूप में चुना गया था।

अब्दुल्ला कख़्बार ने उज्बेक साहित्य में एक महान कहानीकार और इस शैली के अतुलनीय गुरु के रूप में प्रवेश किया। उनकी कहानियों में उज्बेक लोगों के एक स्वस्थ दिमाग, हास्य के लिए अनुकूलित जीवन जैसे सर्वोत्तम विशेषताओं को दिखाया गया है। कख़्बार की कहानियों की भाषा सरल, उपाख्यानों से भरी है और पारंपरिक उज्बेक गद्य की विशिष्ट धूमधाम और अव्यवस्था से मुक्त है।

अब्दुल्ला कख़्बार का कृतित्व सन् 1924 में शुरू हुआ। उनके कृतित्व का पहला नमूना “जब चांद जला” (1924), “मुरतम” पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। बाद में, उनकी कहानियाँ, समंत और संदेश “नया फरगाना” और “फ़िजिल उज्बेकिस्तान” समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए। हालाँकि, लेखक की कहानी “बिना सर का आदमी” (1929) के प्रकाशन के बाद, वह अपने जीवन के अंत तक गद्य में उत्पादक रहे। कहानियों का पहला संग्रह “दुनिया जवान होगा” (1935) नाम से आया। उसके बाद, उनके “कहानियाँ” (1935-1939) नामक संग्रह एक के बाद एक प्रकाशित हुए। इस अवधि के दौरान उन्होंने “माया” (1935) उपन्यास भी लिखा।

युद्ध के वर्षों के दौरान, लेखक के कई समंत, निबंध और कहानियाँ प्रकाशित हुईं। “असरार बाबा”, “दर्दक से निकले हीरो”, “बुढ़ियों ने घंटी बजायी”, “औरतों की कहानियाँ” और “सोने का सितारा” जैसी कहानियाँ उज्बेक सेनानियों की बहादुरी, देश प्रेमी, काम के प्रति हमारे लोगों के उत्साह और उच्चता को दर्शाती हैं।

लेखक का उपन्यास “कोशचीनार के बिजली” (1951) युद्ध के बाद के सामूहिकता के विषय को समर्पित है। लघुकथाएँ “सिंचलक” (1958), “पुरानी कथाएँ” (1965), “मुहब्बत” (1968) ने उज्बेक गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लघु कहानी “पुरानी कथाएँ” के लिए उन्हें हमजा के नाम पर सरकारी पुरस्कार मिला। “पुरानी कथाएँ” में लेखक उन लोगों के बारे में बात करते हैं जिन्होंने उनकी में गहरी छाप छोड़ी। अब्दुल्ला कख़्बार ने स्वयं लिखा था: “जब मैं छोटा था तो मैंने वही लिखा जो मैंने देखा। मैंने सच लिखा, सिर्फ सच। यदि यह सत्य आज के आधुनिक युवाओं को भयानक लगता है, तो मैं इस कड़वे सत्य को एक सच्ची कहानी-एक परी कथा ही कहूँगा!”।

कख़्बार अपनी अनूठी शैली के कारण वास्तव में एक राष्ट्रीय कलाकार हैं। उन्होंने विषय और वास्तविकता को उज्बेकवाद की वास्तविकता से लिया। उनके पात्र इस वातावरण को बढ़ावा देने वाली जीवनशैली, रीति-रिवाजों और व्यवहार से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

एक विचारशील और माँग करने वाला लेखक जो अपने कार्यों की सामग्री को समृद्ध करने और शैलियों की विविधता का विस्तार करने के लिए अथक प्रयास करता है। कख़्बार उपन्यासों और लघु कथाओं के साथ-साथ नाटक के क्षेत्र में भी काम किया।

लेखक की मंच कृतियाँ हैं जैसे “शाही सोजाना” (1949-53), “बीमार दांत” (1954), “ताबुत से आवाज”

परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक
वर्ष 15 • अंक-6 • फरवरी-मार्च 2024

अनुक्रम

संपादकीय

5. विश्व साहित्य के बदलते संदर्भ: डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया

नोबेल वक्तव्य

7. साहित्य के पक्ष में: गाओ झिंगझियान
110. मेरे पिता का बक्सा: ओरहान पामुक

कहानियाँ

13. फ़ैसला: फ्रांज काफ़्का
19. मैसा: यांग फू
22. ईश्वर सत्य को देखता है, परन्तु प्रतीक्षा करता है:
लियो एन. टॉल्स्टॉय
26. सेंट फ्रान्सिस ऑफ़ असीसी के बचपन से: हरमन हेस
38. अपराधी: अन्तोन चेखव
41. सातवाँ आदमी: हारुकी मुराकामी
48. स्पंक: ज़ोरा नील हर्स्टन
51. उस बाग़ में : वर्जीनिया वुल्फ़
53. लाटरी: शर्ली जैक्सन
73. चोर: अब्दुल्ला कख़्ख़ार
75. कब्रिस्तान की परी: गाइ डे मोपासां
79. अनोखी सेज: खलिल जिब्रान
82. मंगलवार दोपहर का आराम: गैब्रिएल गार्सिया मार्केज़
85. बिना नाम का वृद्ध व्यक्ति: बोधि धर्म
92. अम्मी और अतिथि: चु यो-सप
113. राख से उठती एक आवाज: क्रुदर मोरादी
116. नव वर्ष की बलि : लू शुन
119. पीले पड़े पुराने पन्नों पर नीली रोशनाई : शोकूह मीरजादेगी
122. रात का स्कूल: रेमंड कारवर

147. कंक्रीट के अंबारों के उधर: जमाल मीर सादिकी
150. द कम्युनिस्ट: पर्ल एस बक
154. चमगादड़ें: हसन मंज़र
158. मामूली पूछताछ: अर्नेस्ट हेमिंग्वे
160. टेरेसा को चिल्लाने वाला आदमी: इटालो कैल्विनो

आलेख

36. हँसती उदास आँखें: कौशलेन्द्र
70. उज़्बेक कहानिकार अब्दुल्ला कख़्ख़ार: प्रो. उल्फ़त मुख़ीबोवा
144. महान कज़़ाख़ कवि, दार्शनिक और शिक्षक अबाई:
इस्काकोवा ज़ौरे

कविताएँ

29. अनातोली स्तारस्तिन, 31. केदटी निव्याबंडी (बुरुंडी) 33. ऑक्टोवियो पाज़, 34. गैब्रिएल गार्सिया मार्केज़ 35. एरिन हैनसन, 40. कोलिन मॉर्टन, 57. नज़वान दरवेश, 59. मार्क फ़ुटकिन, 63. शार्ल बोदलेअर, 66. लुइस ग्लुक, 68. सलग़ादो मारंथ्यो, 100. शुन्तारो तानिकावा, 102. एमिली डिकसन, 103. अशरफ़ अबूल-याज़़िद, 105. फेदेरिको गार्सिया लोर्का, 107. जार्ज सफ़ैरिस, 108. पी. बी. शेली, 125. सिमिन बेहबाहानी, 129. क्लादीमिर नाबोकोव, 132. बसमान देरावी, 133. बॉब डेलन, 134. अफ़अनासी फ़्येत, गैयोम अपोल्लीनेर, 135. जोवान्नी राबोनी, 136. चार्ल्स बुकोवस्की, 138. निज़ार कब्बानी, 139. फातिहा मोर्शिंद, वार्सन शाएर, हालीना पोस्वियातोव्सका, 140. माया एंजेलो, नाजीह अबू अफ़ा, कैरोल ऐन डफी, 141. कवि ब्यूक्तू सेयुम, येहूदा आमिखाई, लीना टिब्बी 142. माया एंजेलो

अंदर के रेखा चित्र- राजकमल, मो.: 9811616298

परिदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक
वर्ष 15 • अंक-6 • फरवरी-मार्च 2024

संरक्षक

पंकज बिष्ट, अरविंद मोहन, डॉ. विनोद कुमार सिन्हा

संपादक

डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया

कार्यकारी संपादक

श्रीविलास सिंह

प्रबंध संपादक

ठाकुर प्रसाद चौबे

परामर्श संपादक एवं सहयोग

ज्योति स्वरूप शुक्ल, डॉ. पूनम सिंह, रघुवीर शर्मा

कानूनी एवम् वित्तीय सलाहकार

सिद्धार्थ सिंह (अधिवक्ता), महेन्द्र तेवतिया (सी.ए.)

शब्द संयोजन

प्रियांशु

ग्राफिक स्टुडियो

अमित कुमार सोलंकी

संपादकीय संपर्क एवं कार्यालय:

79 ए, दिलशाद गार्डन, नियर पोस्ट ऑफिस, दिल्ली- 110095

मो. 09810636082

E-mail: officeparindepatrika@gmail.com, E-mail: parindepatrika@gmail.com

इस अंक का मूल्य: 200 रु. (एक प्रति), सामान्य अंक: 50 रु. वार्षिक: 450 रु. संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक: 600 रु. वार्षिक (विदेश): 50 यू.एस.डॉलर, आजीवन व्यक्तिगत: 4000 रु. संस्था: 5000 रु.

बैंक के माध्यम से शुल्क भेजने के लिए

परिदे पत्रिका का खाता "पंजाब एंड सिंध बैंक" दिल्ली में है। खाता का नाम-परिदे (Parinde) है एवं खाता संख्या-04801100049782 है तथा इसका आई.एफ.सी कोड PSIB0000484 है।

आवरण चित्र: यूरोपियन ऑर्गेनाइजेशन फॉर न्यूक्लियर रिसर्च प्रयोगशाला (CERN), जेनेवा, जहां गॉड पार्टिकल (हिग्स-बोसोन) की खोज हेतु शोध किया जा रहा है, के बाहर स्थापित नटराज शिव की प्रतिमा। यह प्रतिमा भारत के परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा उपहार स्वरूप प्रदान की गई।

परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक



नित्याय त्रिगुणात्मने पुरजिते कात्यायनी श्रेयसे
सत्यायादिकुटुंबिने मुनिमनः प्रत्यक्षाचिन्मूर्तये।
मायासृष्टजगत्त्रयाय सकलाम्नायान्तसञ्चारिणे
सायं ताण्डवसंभ्रमाय जटिने सेयं नतिः शंभवे॥56॥

-श्री आदि शंकर कृत शिवानन्द लहरी